

# राजर्षि भर्तृहरि मत्स्य विश्वविद्यालय, अलवर

## पाठ्यक्रम

बी.ए. (द्वितीय वर्ष) - तृतीय सेमेस्टर (हिन्दी साहित्य)

### रीतिकालीन काव्य

1 क्रेडिट-25 अंक  
6 क्रेडिट-150 अंक  
प्रश्न पत्र- 120 अंक  
आंतरिक मूल्यांकन -30 अंक

#### उद्देश्य Objectives

1. विद्यार्थियों में महान कवियों की रचनाओं के माध्यम से लेखन कौशल और अभिव्यक्ति क्षमता का विकास
2. हिन्दी साहित्य के अध्ययन के माध्यम से साहित्यिक ब्रजभाषा के स्वरूप तथा विकास की जानकारी प्राप्त करना
3. हिन्दी साहित्य की रीतिकालीन काव्य परंपरा से परिचित कराना .
4. सृजनात्मक लेखन और विवेचनात्मक दृष्टि का विकास करना

#### अधिगम प्रतिफल Learning outcomes)

1. रीतिकाल के महान कवियों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के अध्ययन के माध्यम से साहित्यिक कौशल का विकास कर सकेंगे
2. रीतिकालीन आचार्यों की रीति सम्बन्धित अवधारणाओं को काव्य के माध्यम से समझ सकेंगे।
3. रीतिकाल की सामाजिक , सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय पृष्ठभूमि से परिचित होंगे।
4. रीतिकाल की समृद्ध परम्परा से अवगत होकर रोजगार के विभिन्न अवसर प्राप्त कर सकेंगे।

#### प्रश्नपत्र का अंक विभाजन

यह प्रश्न पत्र तीन खंडों में विभक्त है।

**खण्ड-अ** के अन्तर्गत प्रश्न संख्या 1 , जिसमें सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से दस अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न 2 अंकों का होगा।

**खण्ड -ब** के अंतर्गत प्रश्न संख्या 2,3,4,5 सप्रसंग व्याख्या के होंगे जिसमें दूसरी, तीसरी और चौथी इकाई में निर्धारित पाठ में से कुल चार (4) काव्यांश [एक कवि से एक, आंतरिक विकल्प सहित ] व्याख्या हेतु पूछे जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न दस 10 अंकों का होगा।

**खण्ड -स** के अन्तर्गत प्रश्न संख्या 6,7,8 व 9 निबंधात्मक प्रश्न हैं ,जिसमें प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न [आंतरिक विकल्प सहित ]पूछा जाएगा। प्रत्येक प्रश्न 15 अंकों का होगा।

शशि-ए.ए.

संजाल

## प्रथम इकाई

- (i) रीति काल का इतिहास, परिस्थितियाँ [सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक ], नामकरण
- (ii) रीति कालीन काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ (रीतिबद्ध , रीतिमुक्त , रीति सिद्ध)
- (iii) प्रमुख कवि व उनकी रचनाएँ

## द्वितीय इकाई

1. केशव दास - रामचंद्रिका - संपादक - लाला भगवानदीन,  
रावण - अंगद संवाद
  2. बिहारी - बिहारी रत्नाकर - संपादक - जगन्नाथदास रत्नाकर
- (1) मेरी भव बाधा हरौ ... ..
  - (ii) झीने पट में झुलमुली .....
  - (iii) अजौं तरयौना ही रह्यो ...
  - (iv) जम करि-मुंह तरहरि पर्यो ... ..
  - (v) तौ पर बारों उरबसी....
  - (vi) कहत, नटत, रीझत, खिझत .....
  - (vii) कौन भांति रहिहै बिरदु.. ..
  - (viii) नहिं पराग नहिं मधुर मधु.. ..
  - (ix) मंगल बिंदु सुरंग, मुख ससि ...
  - (x) तंत्री नाद कवित्त-रस....
  - (xi) मकराकृति गोपाल के....
  - (xii) या अनुरागी चित्त की....
  - (xiii) करी विरह ऐसी....

केशवदास

मंगलदास

(xiv) जप माला छापा तिलक... ..

(xv) आडे दे आले बसन... ..

(xvi) स्वारथु सुकृतु न श्रम वृथा

(xvii) कोटि जतन कोउ करे....

(xviii) दृग उरझत टूटत कुटुम... ..

(xix) बतरस लालच लाल की....

(xx) चिरजीवौ जोरी जुरै....

### 3. देव

(i) सुनौ कै परम पद... ..

(ii) डार द्रुम पलना....

(iii) कथा में न कथा में....

(iv) जब ते कुंवर कान्ह....

(v) प्रेम गुन बाँधि... ..

(vi) बरुनी बघंबर औ गूदरी....

(vii) धार में धाय धंसी निरधार है ...

(viii) ऐसो जु हौं जानत हि ... .

(ix) रीझि रीझि रहसि रहसि....

(x) राधिका कान्ह को ध्यान करै....

(xi) झहरि झहरि झीनी बूंद....

(xii) सांसन ही सौं ...

(xiii) खेलत फाग ....

(xiv) आई बरसाने ते... ..

2/10/16

संगीत

(xv) जाके न काम न क्रोध....

## तृतीय इकाई

### 4. भूषण - (भूषण ग्रंथावली - सं. आ. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र)

(i) साहि तनै सरजा रामरथ....

(ii) देखत ऊँचाई उधरत....

(iii) कामिनी कंत सों... .

(iv) पूरब के उत्तर के....

(v) साजि चतुरंग सेन ....

(vi) ऊँचे घोर मंदर के

(vii ) उतरि पलंग से न ... .

(viii) इन्द्र जिमि जम पर... .

(ix) छूटत कमान बान ....

(x) जिन फन फूत्कार ....

(xi) गरुड़ को दावा सदा ....

(xii) बेद राखे बिदित....

(xiii) आपस की फूट ही तें.... .

(xiv) चाक चक्र चमू के....

(xv) राजत अखंड तेज....

### 5. घनानंद - (घनानंद कवित्त सं . आ. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र)

(i) रूप निधान सुजान सखि....

विश्वनाथ

संजीव

- (ii) आंखि ही मेरी पै ....
- (iii) हीन भए जलमीन....
- (iv) मीत सुजान अनीति करि----
- (v) चोप चाह चायनि....
- (vi) ए रे बीर पौन... .
- (vii) कारी कूर कोकिला....
- (viii) प्रीतम सुजान मेरे हित के....
- (ix) छवि को सदन....
- (x) वहै मुसक्यानि....
- (xi) दिननि के फेर सों....
- (xii ) भोर ते साँझ लौं....
- (xiii )) सोये न सोइबो... .
- (xiv) निसि द्यौस खरी..
- (xv) अति सूधो सनेह को....

### चतुर्थ इकाई

6. पद्माकर - ( पद्माकर ग्रंथावली -सं - विश्वनाथ प्रसाद मिश्र )

- (i) विधि के कमंडल की....
- (ii) नीर के निकट रेनु....
- (iii) जमपुर द्वारे लगे.... .
- (iv) कूरम पे कोल....
- (v ) कूलन में केलिन में... .

शुभम  
कंगाल

- (vi) ह्वै थिर मन्दिर में....
- (vii) भोग से रोग....
- (viii) सम्पत्ति सुमेर की....
- (ix) औरै भांति कुंजन में....
- (x) फाग की भीरि....

**7. सेनापति - ( सेनापति कृत कवित्त रत्नाकर - सं. - उमाशंकर शुक्ल )**

- (i) सुरतरु सार की....
- (ii) करत कलोल युति दीरघ....
- (iii) कालिंदी की चार निरधार है.....
- (iv) सेनापति उनए नए जलद सावन के....
- (v) केतकि असोक नव चम्पक.....
- (vi) मालती की माल तेरे तन कौ
- (vii) चित्त चुभी आनि , मुसकानि....
- (viii) बरन बरन तरु फूले....
- (ix) छूटत फुहारे सोई बरसा....
- (x) सीत को प्रबल सेनापति....

**8. आलम - (आलम ग्रंथावली - सं. - विद्यानिवास मिश्र )**

- (i) पौन के परस-....
- (ii) कहूँ भूल्यौ बेनु....
- (iii) अंग अंग जगै जोति....
- (iv) अटा चढ़ी हुती....
- (v) चंद को चकोर देखै....

अनूप  
संजाल

(vi) निधरक भई अनुगवति... .

(vii) तरनिजा तट बंसी-वट... .

(viii) वरै ते न पलक....

(ix) पंकज पटीर देखे... .

(x) उत्तपनि रत रितुपति... .

आंतरिक मूल्यांकन हेतु किन्हीं दो विषयों पर निबंध लेखन

(क) रीति काल की परिस्थितियाँ (राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक)

(ख) रीतिकाल का काल निर्धारण एवं नामकरण

(ग) रीतिकालीन काव्य परम्परा और प्रमुख कवि

(घ) घनानंद का विरह वर्णन

(ङ) रीतिबद्ध और रीतिमुक्त काव्य धारा में समानता एवं अंतर

(च) भूषण के काव्य में राष्ट्रीयता

(छ) बिहारी की काव्य कला

(ज) सेनापति का ऋतु वर्णन

आवि नं १६

संजीव

राजर्षि भर्तृहरि मत्स्य विश्वविद्यालय, अलवर

पाठ्यक्रम

बी.ए. (द्वितीय वर्ष) - चतुर्थ सेमेस्टर (हिन्दी साहित्य)

नाटक एवं एकांकी

1 क्रेडिट -25 अंक

6 क्रेडिट -150 अंक

प्रश्नपत्र -120 अंक

आंतरिक मूल्यांकन-30 अंक

### उद्देश्य (Objectives)

1. विद्यार्थियों में महान साहित्यकारों की रचनाओं के माध्यम से लेखन कौशल और अभिव्यक्ति क्षमता का विकास करना
2. हिन्दी नाटकों के अध्ययन के माध्यम हिंदी भाषा व साहित्य के स्वरूप व विकास की जानकारी प्राप्त करना
3. हिन्दी एकांकी के अध्ययन द्वारा नाट्य विधा के विभिन्न स्वरूपों से परिचय तथा उनकी परंपरा से परिचय करना
4. सृजनात्मक लेखन एवं विवेचनात्मक दृष्टि विकसित करना ।

### अधिगम (Learning Outcomes)

अधिगम

अधिगम

1. हिन्दी नाटकों के अध्ययन से नाट्य शास्त्र की प्राचीन परंपरा का ज्ञान होगा व साहित्यिक अभिरुचि व कौशल का विकास हो सकेगा।
2. नाटक से जुड़ी नवीन विधाओं के प्रयोग द्वारा सामाजिक सरोकारों, समस्याओं व अन्य समसामयिक विषयों को समझने की दृष्टि का विकास हो सकेगा
3. हिन्दी एकांकी के विकास व उसके योगदान को समझ सकेंगे।
4. नाट्य विधा व रंगमंच के विभिन्न पहलुओं को जान कर संचार माध्यमों - सोशल मीडिया, सिनेमा, टेलिविज़न, OTT तथा विज्ञापन आदि क्षेत्रों में रोजगार प्राप्त कर सकेंगे।

### प्रश्नपत्र एवं अंक विभाजन

यह प्रश्न पत्र तीन खंडों में विभक्त है-

**खण्ड- अ** के अन्तर्गत प्रश्न संख्या 1, जिसमें सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से दस अति लघुतरात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न 2 अंकों का होगा।

**खण्ड- ब** के अंतर्गत प्रश्न संख्या 2,3,4,5 सप्रसंग व्याख्या के हैं, जिसमें द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ इकाई में निर्धारित पाठ में से कुल चार (4) व्याख्या (दो नाटक से एवं दो एकांकी से) आंतरिक विकल्प सहित पूछी जाएंगी। प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का होगा।

**खण्ड-के** अन्तर्गत प्रश्न संख्या 6,7,8 एवं 9 निबंधात्मक प्रश्न हैं, जिसमें इकाई प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ से एक एक प्रश्न (कुल चार प्रश्न) आंतरिक विकल्प सहित पूछे जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न 15 अंकों का होगा।

### प्रथम इकाई

- (i) हिन्दी नाटक का उद्भव और विकास
- (ii) हिन्दी नाटक का स्वरूप
- (iii) हिन्दी एकांकी का उद्भव और विकास
- (iv) हिन्दी एकांकी का स्वरूप
- (v) हिन्दी के प्रमुख नाटक व नाटककार
- (vi) हिन्दी के प्रमुख एकांकी एवं एकांकीकार

### द्वितीय इकाई

नाटक - 'एक और द्रोणाचार्य' - लेखक - शंकर शेष

शंकर शेष

किताब घर प्रकाशन , दरियागंज, नई दिल्ली .

### तृतीय इकाई

1. पृथ्वीराज की आँखें - डॉ० रामकुमार वर्मा
2. ऊसर - भुवनेश्वर
3. सूखी डाली- उपेन्द्रनाथ अशक
4. रीढ़ की हड्डी -जगदीश चन्द्र माथुर

### चतुर्थ इकाई

5. नए मेहमान- उदय शंकर भट्ट
6. अंडे के छिलके - मोहन राकेश
7. बसंत ऋतु का नाटक - लक्ष्मी नारायण लाल
- 8- हरितगन्धा - हमीदुल्ला

आंतरिक मूल्यांकन हेतु किन्हीं दो विषयों पर निबंध लेखन-

(क) हिन्दी नाटक के उद्भव और विकास पर संक्षिप्त निबंध

(ख) हिन्दी के प्रमुख नाटककारों का परिचय

(ग) हिन्दी के ऐतिहासिक नाटक

(घ) जयशंकर प्रसाद के नाटक

(ङ) हिन्दी एकांकी और डॉ रामकुमार वर्मा का योगदान

(च) रीढ़ की हड्डी एकांकी की मूल संवेदना

(छ) एक और द्रोणाचार्य नाटक के मुख्य पात्रों का चरित्र चित्रण

(ज) एक और द्रोणाचार्य नाटक की मूल संवेदना

जाकिन्दर  
संजीव